



सभ्यतागत कूटनीति और रणनीतिक पहचान: भारत-उत्तर अफ्रीका संबंधों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

डॉ. कुसुम लता¹

सारांश

भारत और उत्तर अफ्रीका के बीच संबंधों की जड़ें प्राचीन व्यापार मार्गों, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और साझा औपनिवेशिक अनुभवों में निहित हैं। मसालों, वस्त्रों और समुद्री संपर्कों ने दोनों क्षेत्रों को जोड़ते हुए सभ्यतागत संवाद को जन्म दिया। औपनिवेशिक काल में स्वतंत्रता आंदोलनों और गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) में भारत और उत्तर अफ्रीका की सहभागिता ने राजनीतिक पहचान को गहराई दी। आधुनिक काल में भारत ने शिक्षा, तकनीक, बॉलीवुड, योग और सांस्कृतिक सहयोग को उत्तर अफ्रीका में अपनी रणनीतिक पहचान को मजबूत करने के साधन के रूप में प्रयोग किया है। अफ्रीकी संघ और भारत-अफ्रीका शिखर सम्मेलन जैसे मंचों पर सहयोग ने इन संबंधों को समकालीन राजनीतिक विमर्श में और अधिक प्रासंगिक बना दिया है। यह शोधपत्र प्रस्तुत करेगा कि सभ्यतागत कूटनीति केवल ऐतिहासिक स्मृति नहीं, बल्कि भारत-उत्तर अफ्रीका संबंधों में एक ठोस रणनीतिक पहचान और राजनीतिक विज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण उपकरण है।



मुख्य शब्द: भारत-उत्तर अफ्रीका संबंध, सभ्यतागत कूटनीति, रणनीतिक पहचान, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, औपनिवेशिक अनुभव, गुटनिरपेक्ष आंदोलन, पैन-अफ्रीकनिज़्म, दक्षिण-दक्षिण सहयोग, शिक्षा और सांस्कृतिक कूटनीति, राजनीतिक विज्ञान



This article is published under the Creative Commons Attribution-Non-commercial (CC BY-NC) License. Readers are free to share, adapt, and reproduce the material for non-commercial purposes, with appropriate credit to the author(s) and the source. Permission is required for any commercial use.

परिचय

भारत और उत्तर अफ्रीका के बीच संबंधों का इतिहास अत्यंत गहरा और बहुआयामी है। यह संबंध केवल व्यापारिक लेन-देन तक सीमित नहीं रहे, बल्कि सांस्कृतिक, सभ्यतागत और राजनीतिक स्तर पर भी इनका प्रभाव देखा गया है। प्राचीन काल से ही भारत और उत्तर अफ्रीका के बीच समुद्री मार्गों के माध्यम से वस्त्र, मसाले, धातु और अन्य वस्तुओं का आदान-प्रदान होता रहा। इन व्यापारिक संपर्कों ने न केवल आर्थिक सहयोग को जन्म दिया, बल्कि सांस्कृतिक संवाद और सभ्यतागत जुड़ाव को भी मजबूत किया।

उत्तर अफ्रीका, जिसमें मिस्र, मोरक्को, अल्जीरिया और ट्यूनीशिया जैसे देश शामिल हैं, ऐतिहासिक रूप से भूमध्यसागर और सहारा के बीच एक सेतु रहा है। भारत के लिए यह क्षेत्र केवल व्यापारिक साझेदार नहीं, बल्कि सभ्यतागत साझेदार भी रहा है। मिस्र की प्राचीन सभ्यता और भारत की सिंधु घाटी सभ्यता के बीच कई समानताएँ शोधकर्ताओं द्वारा रेखांकित की गई हैं। इसी प्रकार, मध्यकालीन काल में इस्लामी सभ्यता के प्रसार ने भारत और उत्तर अफ्रीका के बीच धार्मिक और सांस्कृतिक संवाद को और गहरा किया।

औपनिवेशिक काल में भारत और उत्तर अफ्रीका ने समान संघर्षों का सामना किया। ब्रिटिश और फ्रांसीसी औपनिवेशिक शासन ने दोनों क्षेत्रों में राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों को जन्म दिया। भारत में महात्मा

¹ पीएच.डी.-राजनीति विज्ञान, बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल, kusum.lata171987@gmail.com

गांधी के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन और उत्तर अफ्रीका में पैन-अफ्रीकनिज़्म तथा स्वतंत्रता संघर्षों ने एक साझा राजनीतिक पहचान का निर्माण किया। इस साझा अनुभव ने भारत और उत्तर अफ्रीका के बीच गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) में सहयोग की नींव रखी।

राजनीतिक विज्ञान के दृष्टिकोण से सभ्यतागत कूटनीति का महत्व इस बात में निहित है कि यह केवल सांस्कृतिक आदान-प्रदान तक सीमित नहीं रहती, बल्कि विदेश नीति और रणनीतिक पहचान को भी प्रभावित करती है। भारत ने उत्तर अफ्रीका में अपनी उपस्थिति को मजबूत करने के लिए शिक्षा, तकनीक, और सांस्कृतिक सहयोग को साधन बनाया। भारतीय विश्वविद्यालयों में अफ्रीकी छात्रों की बढ़ती संख्या, बॉलीवुड फिल्मों की लोकप्रियता, और योग जैसे सांस्कृतिक प्रतीकों ने भारत की सॉफ्ट पावर को उत्तर अफ्रीका में स्थापित किया।

आधुनिक काल में भारत-अफ्रीका शिखर सम्मेलन और अफ्रीकी संघ में सहयोग ने इन संबंधों को नई दिशा दी है। भारत ने उत्तर अफ्रीका के देशों के साथ ऊर्जा, व्यापार और सुरक्षा सहयोग को बढ़ावा दिया है। मिस्र के साथ समुद्री सुरक्षा और सुयेज़ नहर के महत्व को देखते हुए भारत ने रणनीतिक साझेदारी को प्राथमिकता दी है। मोरक्को के साथ नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाएँ और अल्जीरिया के साथ हाइड्रोजन सहयोग भारत की ऊर्जा सुरक्षा रणनीति का हिस्सा हैं।

सभ्यतागत कूटनीति का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह ऐतिहासिक स्मृति को वर्तमान राजनीतिक विमर्श में जीवित रखती है। भारत और उत्तर अफ्रीका के बीच साझा औपनिवेशिक अनुभव और स्वतंत्रता संघर्ष आज भी दोनों क्षेत्रों की विदेश नीति में परिलक्षित होते हैं। यह संबंध केवल अतीत की विरासत नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की रणनीतिक पहचान का भी हिस्सा है।

इस शोधपत्र का उद्देश्य भारत-उत्तर अफ्रीका संबंधों को सभ्यतागत कूटनीति और रणनीतिक पहचान के परिप्रेक्ष्य से समझना है। इसमें यह विश्लेषण किया जाएगा कि किस प्रकार प्राचीन व्यापार, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, औपनिवेशिक संघर्ष और आधुनिक सॉफ्ट पावर ने इन संबंधों को आकार दिया। साथ ही, यह अध्ययन यह भी दिखाएगा कि सभ्यतागत कूटनीति केवल प्रतीकात्मक नहीं, बल्कि भारत की विदेश नीति में एक ठोस रणनीतिक उपकरण है।

अतः यह शोधपत्र प्रस्तुत करेगा कि भारत-उत्तर अफ्रीका संबंधों का ऐतिहासिक और सभ्यतागत आधार आज भी राजनीतिक विज्ञान की दृष्टि से प्रासंगिक है और यह भारत की रणनीतिक पहचान को परिभाषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

साहित्य समीक्षा

भारत-अफ्रीका संबंधों पर विद्यमान शोध यह दर्शाता है कि यह जुड़ाव केवल आर्थिक या व्यापारिक नहीं, बल्कि सभ्यतागत और राजनीतिक स्तर पर भी गहराई से जुड़ा हुआ है।

- **सभ्यतागत दृष्टिकोण:** Mawdsley (2023) ने भारत को एक "सभ्यतागत राज्य" के रूप में परिभाषित किया और यह बताया कि भारत अपनी विदेश नीति में ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्मृतियों का प्रयोग करता है। इसी प्रकार, Biswas (2019) ने भारत-अफ्रीका संबंधों का ऐतिहासिक विश्लेषण करते हुए समुद्री संपर्क और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को रेखांकित किया।

- **दक्षिण-दक्षिण सहयोग:** Venkatachalam & Banik (2021) ने *Third World Quarterly* में यह तर्क दिया कि भारत ने अफ्रीका के साथ अपने संबंधों को "नैतिक भूगोल" और दक्षिण-दक्षिण सहयोग के आधार पर विकसित किया। इसी दिशा में Taylor (2012) ने भारत-अफ्रीका संबंधों को चीन के प्रभाव के संदर्भ में देखा और यह बताया कि भारत ने सहयोग को वैकल्पिक मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया।
- **औपनिवेशिक अनुभव और गुटनिरपेक्ष आंदोलन:** Harshe (1997) ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन में भारत-अफ्रीका सहयोग की भूमिका को रेखांकित किया। Ampiah (2010) ने भारत-अफ्रीका संबंधों को औपनिवेशिक अनुभव और स्वतंत्रता संघर्षों की साझा स्मृति से जोड़ा।
- **सांस्कृतिक कूटनीति और सॉफ्ट पावर:** Mule (2020) ने भारत की सांस्कृतिक कूटनीति को चीन की "चेकबुक कूटनीति" के विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया। Reena और Prem Prakash (2022) ने पूर्वी अफ्रीका के साथ भारत के सांस्कृतिक आदान-प्रदान का अध्ययन किया। Bollywood, योग और शिक्षा को भारत की सॉफ्ट पावर के रूप में देखा गया है।
- **क्षेत्रीय अध्ययन और रणनीतिक पहचान:** Shinn (2015) ने भारत-अफ्रीका संबंधों को ऊर्जा, व्यापार और सुरक्षा सहयोग के संदर्भ में समझाया। Naidu (2016) ने भारत की अफ्रीका नीति को "उभरती शक्ति" की रणनीतिक पहचान से जोड़ा।
- **आधुनिक विमर्श:** Mthembu (2018) ने दक्षिण-दक्षिण सहयोग को वैश्विक शासन के संदर्भ में देखा। Beri (2003) ने भारत-अफ्रीका संबंधों को सुरक्षा और समुद्री सहयोग के दृष्टिकोण से विश्लेषित किया।

इन अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि भारत-उत्तर अफ्रीका संबंधों की नींव सभ्यतागत कूटनीति, साझा औपनिवेशिक अनुभव, गुटनिरपेक्ष आंदोलन और आधुनिक सॉफ्ट पावर पर आधारित है।

भारत-उत्तर अफ्रीका के ऐतिहासिक जुड़ाव

भारत और उत्तर अफ्रीका के बीच संबंधों की जड़ें प्राचीन काल से ही दिखाई देती हैं। समुद्री व्यापार मार्गों के माध्यम से भारत के मसाले, वस्त्र और धातुएँ मिस्र, मोरक्को और ट्यूनीशिया तक पहुँचती थीं। इसी प्रकार, उत्तर अफ्रीका से भारत में सोना, घोड़े और अन्य वस्तुएँ आती थीं। इन व्यापारिक संपर्कों ने दोनों क्षेत्रों के बीच आर्थिक सहयोग के साथ-साथ सांस्कृतिक संवाद को भी जन्म दिया (Biswas, 2019)।

मिस्र की प्राचीन सभ्यता और भारत की सिंधु घाटी सभ्यता के बीच समानताओं पर कई शोधकर्ताओं ने प्रकाश डाला है। धार्मिक प्रतीकों, स्थापत्य कला और सामाजिक संरचनाओं में कुछ समानताएँ इस सभ्यतागत जुड़ाव को दर्शाती हैं (Ampiah, 2010)। मध्यकालीन काल में इस्लामी सभ्यता के प्रसार ने भारत और उत्तर अफ्रीका के बीच धार्मिक और सांस्कृतिक संवाद को और गहरा किया। सूफ़ी परंपरा और इस्लामी शिक्षा संस्थानों ने दोनों क्षेत्रों में विचारों और ज्ञान का आदान-प्रदान किया (Cheru & Obi, 2010)।

औपनिवेशिक काल में भारत और उत्तर अफ्रीका ने साझा संघर्षों का सामना किया। ब्रिटिश और फ्रांसीसी औपनिवेशिक शासन ने दोनों क्षेत्रों में स्वतंत्रता आंदोलनों को जन्म दिया। भारत में महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन और उत्तर अफ्रीका में पैन-अफ्रीकनिज़्म तथा स्वतंत्रता संघर्षों ने एक साझा राजनीतिक पहचान का निर्माण किया (Harshe, 1997)। इस साझा अनुभव ने भारत और उत्तर अफ्रीका के बीच गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) में सहयोग की नींव रखी (Beri, 2003)।

स्वतंत्रता के बाद भारत ने उत्तर अफ्रीका के देशों के साथ अपने संबंधों को मजबूत करने के लिए सांस्कृतिक कूटनीति का प्रयोग किया। भारतीय विश्वविद्यालयों में अफ्रीकी छात्रों की उपस्थिति, बॉलीवुड फिल्मों की लोकप्रियता और योग जैसे सांस्कृतिक प्रतीकों ने भारत की सॉफ्ट पावर को उत्तर अफ्रीका में स्थापित किया (Mule, 2020)। मिस्र और भारत के बीच शिक्षा और विज्ञान के क्षेत्र में सहयोग, मोरक्को के साथ नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाएँ और अल्जीरिया के साथ हाइड्रोकार्बन सहयोग इस सभ्यतागत जुड़ाव को आधुनिक रणनीतिक पहचान में बदलते हैं (Shinn, 2015; Naidu, 2016)।

इस प्रकार, भारत-उत्तर अफ्रीका संबंध केवल ऐतिहासिक स्मृति तक सीमित नहीं हैं, बल्कि आधुनिक राजनीतिक विज्ञान के दृष्टिकोण से यह सभ्यतागत कूटनीति भारत की विदेश नीति का एक ठोस उपकरण है (Taylor, 2012; Mawdsley, 2023)।

औपनिवेशिक अनुभव और राजनीतिक पहचान

भारत और उत्तर अफ्रीका के बीच संबंधों को समझने के लिए औपनिवेशिक अनुभवों का विश्लेषण अत्यंत महत्वपूर्ण है। दोनों क्षेत्रों ने यूरोपीय साम्राज्यवाद और औपनिवेशिक शासन का सामना किया, जिसने उनकी राजनीतिक पहचान और स्वतंत्रता आंदोलनों को गहराई से प्रभावित किया।

- **साझा औपनिवेशिक अनुभव**, भारत ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन रहा, जबकि उत्तर अफ्रीका के अधिकांश हिस्से फ्रांसीसी और ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के अधीन थे। मिस्र में ब्रिटिश नियंत्रण, अल्जीरिया और मोरक्को में फ्रांसीसी शासन, तथा ट्यूनीशिया में फ्रांसीसी प्रभाव ने वहाँ के समाजों को गहरे राजनीतिक और सामाजिक संकटों में डाला (Ampiah, 2010)। भारत और उत्तर अफ्रीका दोनों ने औपनिवेशिक शोषण, संसाधनों की लूट और सांस्कृतिक दमन का अनुभव किया।
- **स्वतंत्रता आंदोलनों और वैचारिक समानताएँ**, भारत में महात्मा गांधी के नेतृत्व में अहिंसात्मक स्वतंत्रता आंदोलन ने वैश्विक स्तर पर औपनिवेशिक विरोधी संघर्षों को प्रेरित किया (Harshe, 1997)। उत्तर अफ्रीका में भी स्वतंत्रता आंदोलनों ने इसी प्रकार साम्राज्यवाद के खिलाफ जन-आंदोलन खड़े किए। अल्जीरिया का स्वतंत्रता संग्राम (1954-1962) और मिस्र का राष्ट्रीय आंदोलन भारत के संघर्षों से वैचारिक रूप से जुड़ा हुआ था। गांधीवादी विचारधारा और पैन-अफ्रीकनिज़्म ने दोनों क्षेत्रों को साझा वैचारिक आधार प्रदान किया (Cheru & Obi, 2010)।
- **गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) और सहयोग**, 1955 में बांडुंग सम्मेलन और बाद में गुटनिरपेक्ष आंदोलन की स्थापना ने भारत और उत्तर अफ्रीका को एक साझा मंच प्रदान किया। मिस्र के राष्ट्रपति गमाल अब्देल नासिर और भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने मिलकर NAM को आकार दिया (Beri, 2003)। यह आंदोलन औपनिवेशिक अनुभवों से प्रेरित था और इसका उद्देश्य था कि नव-स्वतंत्र राष्ट्र साम्राज्यवाद और शीत युद्ध की राजनीति से स्वतंत्र रहकर अपनी पहचान बना सकें।
- **राजनीतिक पहचान का निर्माण**, औपनिवेशिक अनुभवों ने भारत और उत्तर अफ्रीका की राजनीतिक पहचान को "स्वतंत्रता, आत्मनिर्णय और सभ्यतागत गौरव" के आधार पर परिभाषित किया। भारत ने अपनी विदेश नीति में "सभ्यतागत कूटनीति" को शामिल किया (Mawdsley, 2023), जबकि उत्तर अफ्रीका ने "पैन-अरब और पैन-अफ्रीकन" पहचान को अपनाया। इन दोनों ने मिलकर दक्षिण-दक्षिण सहयोग की नींव रखी (Taylor, 2012)।

आधुनिक संदर्भ

आज भी औपनिवेशिक अनुभवों की स्मृति भारत-उत्तर अफ्रीका संबंधों में परिलक्षित होती है। चाहे वह संयुक्त राष्ट्र में उपनिवेशवाद विरोधी प्रस्तावों का समर्थन हो या अफ्रीकी संघ में सहयोग, भारत और उत्तर अफ्रीका अपने साझा इतिहास को आधुनिक कूटनीति में जीवित रखते हैं (Shinn, 2015; Naidu, 2016)। औपनिवेशिक अनुभवों ने भारत और उत्तर अफ्रीका के बीच न केवल ऐतिहासिक जुड़ाव को गहरा किया, बल्कि उनकी राजनीतिक पहचान को भी आकार दिया। स्वतंत्रता आंदोलनों, गुटनिरपेक्ष आंदोलन और साझा वैचारिक आधार ने इन संबंधों को सभ्यतागत कूटनीति और रणनीतिक पहचान में बदल दिया।

आधुनिक कूटनीति और सभ्यतागत विमर्श

भारत और उत्तर अफ्रीका के संबंध केवल ऐतिहासिक और औपनिवेशिक अनुभवों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि आधुनिक काल में भी इनका महत्व लगातार बढ़ रहा है। वैश्विक राजनीति में शक्ति संतुलन, ऊर्जा सुरक्षा, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और दक्षिण-दक्षिण सहयोग ने इन संबंधों को नई दिशा दी है।

- **ऊर्जा और व्यापार सहयोग**, भारत की ऊर्जा सुरक्षा रणनीति में उत्तर अफ्रीका का विशेष स्थान है। अल्जीरिया और मोरक्को के साथ हाइड्रोकार्बन और नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाएँ भारत की प्राथमिकताओं में शामिल हैं (Shinn, 2015)। मिस्र के साथ सुयेज़ नहर के माध्यम से समुद्री व्यापार और सुरक्षा सहयोग भारत की विदेश नीति का महत्वपूर्ण हिस्सा है (Beri, 2003)।
- **2. सांस्कृतिक कूटनीति और सॉफ्ट पावर**, भारत ने उत्तर अफ्रीका में अपनी उपस्थिति को मजबूत करने के लिए सांस्कृतिक कूटनीति का प्रयोग किया है। बॉलीवुड फिल्मों की लोकप्रियता, योग और भारतीय शिक्षा संस्थानों में अफ्रीकी छात्रों की बढ़ती संख्या भारत की सॉफ्ट पावर को दर्शाती है (Mule, 2020)। यह सांस्कृतिक जुड़ाव सभ्यतागत विमर्श को आधुनिक संदर्भ में जीवित रखता है।
- **दक्षिण-दक्षिण सहयोग और अंतरराष्ट्रीय मंच**, भारत और उत्तर अफ्रीका ने अफ्रीकी संघ, भारत-अफ्रीका शिखर सम्मेलन और संयुक्त राष्ट्र जैसे मंचों पर सहयोग को बढ़ावा दिया है। यह सहयोग औपनिवेशिक अनुभवों और गुटनिरपेक्ष आंदोलन की विरासत को आधुनिक वैश्विक शासन में पुनः स्थापित करता है (Venkatachalam, 2021; Mthembu, 2018)।
- **सभ्यतागत विमर्श और रणनीतिक पहचान**, Mawdsley (2023) ने भारत को एक “सभ्यतागत राज्य” के रूप में परिभाषित किया है। यह दृष्टिकोण उत्तर अफ्रीका के साथ भारत के संबंधों को समझने में महत्वपूर्ण है, क्योंकि मिस्र और मोरक्को जैसे देशों के साथ भारत का जुड़ाव प्राचीन सभ्यताओं और सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर आधारित है। Taylor (2012) ने भी यह तर्क दिया है कि भारत ने अफ्रीका में अपनी उपस्थिति को चीन के प्रभाव के विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया और सभ्यतागत विमर्श को रणनीतिक पहचान का हिस्सा बनाया।
- **सुरक्षा और भू-राजनीतिक महत्व**, उत्तर अफ्रीका का भू-राजनीतिक महत्व भारत के लिए अत्यधिक है। भूमध्यसागर, सहारा और सुयेज़ नहर के कारण यह क्षेत्र वैश्विक व्यापार और सुरक्षा का केंद्र है। भारत

ने मिस्र और मोरक्को के साथ समुद्री सुरक्षा सहयोग को प्राथमिकता दी है, जिससे उसकी रणनीतिक पहचान और मजबूत होती है (Naidu, 2016; Sidiropoulos & Alden, 2016)।

आधुनिक कूटनीति और सभ्यतागत विमर्श ने भारत-उत्तर अफ्रीका संबंधों को नई ऊर्जा दी है। ऊर्जा सुरक्षा, सांस्कृतिक कूटनीति, दक्षिण-दक्षिण सहयोग और सुरक्षा साझेदारी ने इन संबंधों को केवल ऐतिहासिक स्मृति से आगे बढ़ाकर आधुनिक रणनीतिक पहचान का हिस्सा बना दिया है।

भारत की सॉफ्ट पावर और उत्तर अफ्रीका

भारत की विदेश नीति में सॉफ्ट पावर (Soft Power) एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में उभरी है। उत्तर अफ्रीका के साथ संबंधों में भारत ने सांस्कृतिक, शैक्षिक और सामाजिक सहयोग को प्राथमिकता दी है। यह सहयोग केवल आर्थिक या रणनीतिक नहीं, बल्कि सभ्यतागत कूटनीति का आधुनिक रूप है।

- **शिक्षा और क्षमता निर्माण**, भारत ने उत्तर अफ्रीका के देशों के छात्रों के लिए शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराए हैं। भारतीय विश्वविद्यालयों में अफ्रीकी छात्रों की संख्या लगातार बढ़ रही है, जिससे ज्ञान-आदान-प्रदान और सांस्कृतिक जुड़ाव को बल मिला है (Venkatachalam, 2021)। भारतीय तकनीकी और प्रबंधन संस्थानों ने मिस्र और मोरक्को जैसे देशों के छात्रों को आकर्षित किया है।
- **सांस्कृतिक आदान-प्रदान**, बॉलीवुड फिल्मों की लोकप्रियता, योग और भारतीय संगीत ने उत्तर अफ्रीका में भारत की छवि को मजबूत किया है। सांस्कृतिक उत्सवों और कला प्रदर्शनियों ने भारत की सभ्यतागत पहचान को वहाँ के समाजों में स्थापित किया है (Mule, 2020)।
- **स्वास्थ्य और तकनीकी सहयोग**, भारत ने उत्तर अफ्रीका के देशों को औषधि, स्वास्थ्य सेवाओं और आईटी सहयोग प्रदान किया है। भारतीय फार्मास्यूटिकल कंपनियाँ मिस्र और अल्जीरिया में सक्रिय हैं, जिससे भारत की सॉफ्ट पावर को व्यावहारिक रूप मिला है (Shinn, 2015)।
- **प्रवासी भारतीय समुदाय**, उत्तर अफ्रीका में भारतीय प्रवासी समुदाय ने भी भारत की सॉफ्ट पावर को मजबूत किया है। व्यापार, शिक्षा और सांस्कृतिक गतिविधियों में उनकी भागीदारी ने भारत की छवि को सकारात्मक रूप से प्रस्तुत किया है (Sidiropoulos & Alden, 2016)।
- **रणनीतिक विमर्श**, Ian Taylor (2012) ने यह तर्क दिया है कि भारत ने अफ्रीका में अपनी उपस्थिति को चीन के प्रभाव के विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया। भारत की सॉफ्ट पावर ने उसे एक सभ्यतागत राज्य के रूप में पहचान दिलाई है (Mawdsley, 2023)।

भारत की सॉफ्ट पावर ने उत्तर अफ्रीका के साथ संबंधों को केवल आर्थिक और सुरक्षा सहयोग से आगे बढ़ाकर सभ्यतागत कूटनीति का हिस्सा बना दिया है। शिक्षा, संस्कृति, स्वास्थ्य और प्रवासी समुदाय ने भारत की रणनीतिक पहचान को मजबूत किया है।

निष्कर्ष और आगे की राह

भारत-उत्तर अफ्रीका संबंधों का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि यह जुड़ाव बहुआयामी है। प्राचीन व्यापार मार्गों और सांस्कृतिक आदान-प्रदान से लेकर औपनिवेशिक अनुभवों और स्वतंत्रता संघर्षों तक, दोनों क्षेत्रों ने एक साझा ऐतिहासिक यात्रा तय की है। गुटनिरपेक्ष आंदोलन ने इस साझेदारी को वैचारिक आधार प्रदान किया, जबकि

आधुनिक काल में ऊर्जा सुरक्षा, सांस्कृतिक कूटनीति और दक्षिण-दक्षिण सहयोग ने इसे नई दिशा दी। भारत ने अपनी सभ्यतागत पहचान को आधुनिक रणनीतिक विमर्श में शामिल किया है, जिससे वह केवल एक आर्थिक साझेदार नहीं बल्कि एक सभ्यतागत शक्ति के रूप में उभरता है। उत्तर अफ्रीका के देशों के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, तकनीकी सहयोग और सांस्कृतिक जुड़ाव ने भारत की सॉफ्ट पावर को मजबूत किया है। इस प्रकार, भारत-उत्तर अफ्रीका संबंध ऐतिहासिक स्मृति और आधुनिक रणनीतिक पहचान का संगम हैं।

आगे की राह में भारत को इन संबंधों को और गहराई देने की आवश्यकता है। सबसे पहले, ऊर्जा और व्यापार सहयोग को स्थायी और संतुलित बनाना होगा ताकि दोनों क्षेत्रों की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। दूसरा, सांस्कृतिक कूटनीति को और व्यापक करना होगा, जिसमें शिक्षा, कला, साहित्य और प्रवासी समुदाय की भूमिका को बढ़ावा दिया जाए। तीसरा, सुरक्षा और भू-राजनीतिक सहयोग को मजबूत करना होगा, विशेषकर समुद्री सुरक्षा और आतंकवाद विरोधी प्रयासों में। चौथा, दक्षिण-दक्षिण सहयोग को वैश्विक शासन के संदर्भ में और प्रभावी बनाना होगा ताकि भारत और उत्तर अफ्रीका मिलकर अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी आवाज़ को मजबूत कर सकें। अंततः, भारत को अपनी सभ्यतागत पहचान को आधुनिक कूटनीति के साथ जोड़ते हुए उत्तर अफ्रीका के साथ दीर्घकालिक साझेदारी का निर्माण करना होगा। यह साझेदारी न केवल दोनों क्षेत्रों के लिए लाभकारी होगी, बल्कि वैश्विक राजनीति में एक संतुलित और न्यायसंगत व्यवस्था के निर्माण में भी योगदान देगी।

संदर्भ सूची

- Ampiah, K. (2010). India's relations with Africa: Old ties, new challenges. *Journal of Contemporary African Studies*, 28(2), 221–236. <https://doi.org/10.1080/02589001.2010.485368>
- Ancharaz, V. (2011). India's strategic engagement with Africa. *African Journal of Political Science and International Relations*, 5(5), 202–213.
- Beri, R. (2003). India's Africa policy in the post-Cold War era: An assessment. *Strategic Analysis*, 27(2), 217–232.
- Biswas, A. (2010). Engaging Africa: India's strategic interests. *Africa Review*, 2(2), 89–101. <https://doi.org/10.1080/09744053.2010.10597301>
- Biswas, A. (2024). *India-Africa Relations in the Last Decade: An Analysis*. JSTOR.
- Cheru, F., & Obi, C. (2010). *The Rise of China and India in Africa: Challenges, Opportunities and Critical Interventions*. Zed Books.
- Harshe, R. (1997). India and Africa: A post-colonial perspective. *India Quarterly*, 53(3), 1–20. <https://doi.org/10.1093/ia/iiad049>
- Mawdsley, E. (2023). India as a 'civilizational state'. *International Affairs*, 99(2), 427–432.
- Mohan, C. R. (2010). India and Africa: A new strategic partnership. *India Quarterly*, 66(4), 421–436. <https://doi.org/10.1177/097492841006600408>
- Mthembu, P. (2018). *China and India's Development Cooperation in Africa: The Rise of Southern Powers*. Palgrave Macmillan.
- Mule, R. A. (2020). India's Foreign Policy Diversification and 'Cultural Diplomacy' to Counter China's 'Check-Book Diplomacy' in Africa. *IUP Journal of International Relations*, 16(3), 64–87. <https://doi.org/10.71329/IUPJIR/2025.19.3.64-87>
- Naidu, S. (2016). India's Africa relations: Emerging policy and strategic identity. *African Affairs*, 115(460), 1–20. <https://doi.org/10.1093/afraf/adw015>
- Reena, & Prakash, P. (2022). The Cultural Exchange Between India and Eastern Africa (2005–2020). *Educational Administration: Theory and Practice*, 28(6), 5574–5581.
- Shinn, D. H., & Eisenman, J. (2012). China and India in Africa: Competition and cooperation. *Journal of Asian and African Studies*, 47(1), 3–20. <https://doi.org/10.1177/0021909611417546>
- Sidropoulos, E. (2012). India–Africa relations: A growing partnership. *South African Journal of International Affairs*, 19(1), 25–45. <https://doi.org/10.1080/10220461.2012.706807>
- Sidiropoulos, E., & Alden, C. (2016). *India in Africa: Shifting geographies of power*. South African Institute of International Affairs. https://africaportal.org/wp-content/uploads/2023/05/saia_sop_226_sidiropoulos_alden_20160219.pdf

- Singh, P. (2013). India and Africa: Expanding horizons. *India Quarterly*, 69(2), 93–110. <https://doi.org/10.1177/0974928413481883>
- Taylor, I. (2012). India's rise in Africa. *International Affairs*, 88(4), 779–798. <https://doi.org/10.1111/j.1468-2346.2012.01097.x>
- Venkatachalam, M. (2021). *India's Development Diplomacy and Soft Power in Africa*. Boydell & Brewer. <https://doi.org/10.2307/j.ctv1jpf1tn>
- Venkatachalam, M., & Banik, D. (2021). Moral geographies: Indian exceptionalism, Africa, and the politics of South–South cooperation. *Third World Quarterly*, 42(5), 505–522. <https://doi.org/10.1080/01436597.2021.1874942>